College : Vaishali Mahila College
Teacher's Name : SHIVI SINHA
Designation : Assistant Professor (Guest)
Class : B.A. PART-III
Subject | Paper : PAPER-V
PHILOSOPHY OF RELIGION.

Scanned with CamScanner

SHIVI SINHA
ASST. PROF. (GUEST)
VAISHALI MAHILA COLLEGE

PAPER-V. PHILOSOPHY OF RELIGION

B.A. PART-III (HONOURS)

FOUNDATION OF RELIGIOUS BELIEF - FAITH & REASON

Date: 25/02/2020

Topic - Reason (Continued)

विषय - बुद्धि (Continued)

अब हमें यह देखना है कि धर्म और धर्मशास्त्र में तर्क बुद्धि की क्या भूमिका हो सकती है। प्रत्येक धर्म का आधार कोई न कोई धर्म-शास्त्र या श्रुति होती है।

ईसाई धर्म बाइबिल पर, इस्लाम कुरान पर और हिन्दू धर्म वेद, उपनिषद और गीता पर आधारित है। प्रत्येक धर्म इसी प्रकार किसी न किसी पावन धर्म ग्रन्थ पर आधारित है। प्रत्येक धर्म इसी प्रकार किसी न किसी पावन धर्म ग्रन्थ पर आधारित होता है। कभी-कभी धर्मशास्त्र अत्यन्त दुरूह, जटिल एवं अस्पष्ट होते हैं तर्कबुद्धि की सहायता से कठिन एवं दुरूह अंशों की व्याख्या की जाती है। तथा अस्पष्टता का निराकरण करके स्पष्टता की व्याख्या की जाती है। उदाहरण के लिए तर्कबुद्धि के आधार पर ही शंकराचार्य ने उपनिषदों के आधार पर अद्वैत वेदान्त की प्रस्थापना की और रामानुज ने विशिष्टाद्वैत वेदान्त की स्थापना की। तर्कबुद्धि के द्वारा धार्मिक विश्वास को सबलता प्रदान की जाती है।

तर्कबुद्धि की धर्म के क्षेत्र में एक अन्य

उल्लेखनीय भूमिका यह है कि इसकी सहायता से दैवी प्रकाशना को स्थायित्व प्रदान किया जाता है। सामान्यतया दैवी प्रकाशना या रहस्यात्मक अनुभूति क्षणिक, अस्थिर और अस्थायी होती है, इसलिए तर्कबुद्धि के सहारे इसे अभिव्यक्त करने, संसूचित करने और संप्रेषित करने में सफलता प्राप्त होती है। इस प्रकार तर्कबुद्धि के द्वारा ही दैवी प्रकाशना को भविष्य के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। धार्मिक अनुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए प्रत्ययों की आवश्यकता पड़ती है और प्रत्ययों की उत्पत्ति तर्कशक्ति के बिना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए रहस्यवादी जिस रहस्यात्मक अनुभूति का अनुभव करता है, वह अलौकिक अनुभूति क्षणिक होती है, उससे वह रहस्यवादी आनन्द और उत्साह प्राप्त करता है परन्तु प्रत्यक्षतः इस अनुभूति को दूसरे व्यक्तियों को न तो संसूचित कर सकता है और न ही संप्रेषित कर सकता है। इसे अभिव्यक्त करने के लिए भाषा की आवश्यक होती है, भाषा प्रत्ययों और विचारों पर आधारित होती है, प्रत्यय या विचार तर्कबुद्धि पर आश्रित होते हैं।

Scanned with CamScanner